13 संत रैदास

कवि : एक संक्षिप्त परिचय

- **जन्म–**संवत् 1471
- **जन्म स्थान–**मड़ुवाडीह (वाराणसी)
- कबीर के गुरुभाई थे।
- **गुरु–**रामानन्द
- **मृत्यु–**संवत् 1597

जीवन-परिचय–भक्ति कालीन कवियों में सन्त रैदास का महत्त्वपूर्ण स्थान है, किन्तु सटीक साक्ष्यों के अभाव में आज भी इनका जीवन अन्धकारपूर्ण है। रैदास की अनेक कृतियों में उनके अनेक नाम देखने को मिलते हैं। देश के विभिन्न भागों में उनके ऐसे अनेक नाम प्रचलित हैं जिनमें उच्चारण की दृष्टि से बहुत थोड़ा अन्तर है। रैदास (पंजाब), रविदास (आधुनिक), रयदास, रदास (बीकानेर की प्रतियों में), रयिदास आदि नाम इस उच्चारण की भिन्नता को ही प्रकट करते हैं। इसलिए लोक-प्रचलन और सुविधा की दृष्टि से उनका मूल नाम रैदास ही स्वीकार किया जाता है। भक्तमाल में कहा गया है कि रैदास रामानन्द के शिष्य थे। स्वतः रैदास की वाणी में भी ऐसे उद्धरण उपलब्ध हैं, जहाँ उन्होंने स्वामी रामानन्द को अपना गुरु स्वीकार किया है—

रामानन्द मोहि गुरु मिल्यो, पायो ब्रह्मविसास।
रस नाम अमीरस पिऔ, रैदास ही भयौ पलास॥

रामानन्द का समय 14वीं शताब्दी के मध्य से 15वीं शताब्दी के उत्तरार्द्ध तक माना जाता है किन्तु इसकी विरोधी धारणा यह भी प्रचलित है कि रैदास मीरा के गुरु थे। मीरा का समय 16वीं शताब्दी के मध्य से 17वीं शताब्दी के आरम्भ तक माना गया है। प्रायः सभी विद्वानों की धारणा है कि रैदास कबीर (जन्म सं0 1455) के समकालीन थे। रैदास के माता-पिता के बारे में प्रामाणिक रूप से कुछ कहना कठिन जान पड़ता है।

रैदास के जन्म के सन्दर्भ में विद्वानों की आम राय यह है कि रविदास स्वामी रामानन्द के बारह शिष्यों में से एक थे। उनका नाम रैदास प्रचलित है। उनका जन्म काशी में मड़ुवाडीह ग्राम में संवत् 1471 में माघी पूर्णिमा को रविवार के दिन हुआ। रविवार को जन्म होने के कारण उनका नाम रविदास पड़ा।

रैदास के निर्वाण की तिथि तथा स्थल के विषय में कोई प्रामाणिक सूचना नहीं मिलती। चित्तौड़ के रविदासी भक्तों का कथन है कि चित्तौड़ में कुम्भनश्याम के मन्दिर के निकट जो रविदास की छतरी बनी हुई है, वही उनके निर्वाण का स्थल है। उस छतरी में रैदास जी के निर्वाण की स्मृतिस्वरूप रैदास जी के चरण-चिह्न भी बने हुए हैं। रैदास-रामायण के रचयिता ने लिखा है

कि रैदास गंगा तट पर तपस्या करते हुए जीवन-मुक्त हुए। दोनों ही विचारधारावाले लोग रैदास का 'सदेह गुप्त' होना मानते हैं। श्रद्धालु भक्त महापुरुषों का सदेह गुप्त होना ही मान सकते हैं, किन्तु इस सदेह गुप्त होने से एक संशय उत्पन्न होता है। वस्तुतः रैदास के निर्वाण को किसी ने देखा नहीं और इसीलिए उनकी मृत्यु को श्रद्धापूर्वक 'सन्देह गुप्त' अथवा 'सदेह गुप्त' कह दिया गया। वस्तुतः रैदास जी अचानक किसी स्थल पर अनायास स्वर्गवासी हो गये होंगे और भक्तों को ज्ञात नहीं हो सका होगा, इसीलिए उनके विषय में श्रद्धापूर्वक सदेह-गुप्त होने की बात चल पड़ी। रैदास के मृत्यु-स्थल का किसी को भी पता नहीं है।

रविदासी सम्प्रदाय तथा भक्तों में रैदास की निर्वाण-तिथि चैत बदी चतुर्दशी मानी जाती है। किसी अन्य प्रमाण के अभाव में हम भी इसी तिथि को रैदास की निर्वाण-तिथि मान सकते हैं। जहाँ तक रैदास के निर्वाण के वर्ष का प्रश्न है, कुछ विद्वानों ने रैदास का मृत्यु-वर्ष संवत् 1597 माना है। 'मीरा-स्मृति-ग्रंथ' में उनका मृत्यु-वर्ष संवत् 1576 माना गया है। हाँ, यह बात अवश्य है कि रैदास के निर्वाण के सम्बन्ध में इन वर्षों को मानने वाले श्रद्धालु भक्तों ने उनकी आयु 130 वर्ष तक मानकर उनको कबीर से भी ज्येष्ठ सिद्ध करने की चेष्टा अवश्य की है।

साहित्यिक सेवाएँ–संत रैदास उन महान सन्तों में स्थान रखते हैं जिन्होंने अपनी रचनाओं के माध्यम से समाज में व्याप्त बुराइयों को दूर करने में महत्त्वपूर्ण योगदान किया। इनकी वाणी ज्ञानाश्रयी होते हुए भी ज्ञानाश्रयी एवं प्रेमाश्रयी शाखाओं के मध्य सेतु की तरह है।

रैदास से सम्बन्धित रचनाएँ–(1) आदि ग्रन्थ में उपलब्ध रैदास की वाणी, (2) रैदास की वाणी, वेलवेडियर प्रेस, (3) सन्त रैदास और उनका काव्य (सम्पादक : रामानन्द शास्त्री तथा वीरेन्द्र पाण्डेय), (4) सन्त सुधासार (सम्पादक : वियोगी हरि), (5) सन्त-काव्य (परशुराम चतुर्वेदी), (6) सन्त रैदास : व्यक्तित्व एवं कृतित्व (संगमलाल पाण्डेय), (7) सन्त रैदास (डॉ0 जोगिन्दर सिंह), (8) रैदास दर्शन (सम्पादक : आचार्य पृथ्वीसिंह आजाद), (9) सन्त रविदास (श्री रत्नचन्द), (10) सन्त रविदास : विचारक और कवि (डॉ0 पदम गुरुचरण सिंह) और (11) सन्त गुरु रविदास वाणी (डॉ0 वेणीप्रसाद शर्मा)।

भाषा-शैली–रैदास की भाषा वस्तुतः तत्कालीन उत्तर भारत की सामान्य जनता के प्रति ग्राह्य भाषा बनकर राष्ट्रीय एकसूत्रता की भाषा बन गयी थी। इनकी भाषा में अवधी एवं ब्रज के शब्दों का अधिकाधिक प्रयोग हुआ है। इनकी शैली भी प्रसाद गुण सम्पन्न और मुख्यतः अभिधात्मक ही रही है। रैदास के काव्य में भावातिरेक की मात्रा अधिक थी, अतः उनकी रचनाओं में उस अतिरेक को प्रकट करने के लिए प्रतीकात्मक लाक्षणिक शैली अनेक स्थलों पर सहायक सिद्ध हुई है।

♦

प्रभुजी तुम चन्दन हम पानी

प्रभु जी तुम चंदन हम पानी। जाकी अंग-अंग बास समानी।।
प्रभु जी तुम घन बन हम मोरा। जैसे चितवत चंद चकोरा।।
प्रभु जी तुम दीपक हम बाती। जाकी जोति बरै दिन राती।।
प्रभु जी तुम मोती हम धागा। जैसे सोनहिं मिलत सोहागा।
प्रभु जी तुम स्वामी हम दासा। ऐसी भक्ति करै रैदासा।।

अभ्यास प्रश्न

● विस्तृत उत्तरीय प्रश्न

1. निम्नलिखित पद्यांशों की ससन्दर्भ व्याख्या कीजिए तथा काव्यगत सौन्दर्य भी स्पष्ट कीजिए–

(क) प्रभुजी तुम चन्दन ------------------ चन्द चकोरा।

(ख) प्रभु जी तुम दीपक ------------------मिलत सोहागा।

(ग) प्रभु जी तुम स्वामी ------------------ करै रैदासा।

2. रैदास का जीवन परिचय देते हुए उनकी रचनाओं का उल्लेख कीजिए।

अथवा **रैदास की साहित्यिक सेवाओं एवं भाषा-शैली पर प्रकाश डालिए।**

● लघु उत्तरीय प्रश्न

1. 'प्रभु जी तुम चन्दन हम पानी' कविता का केन्द्रीय भाव लिखिए।
2. 'प्रभु जी तुम चन्दन हम पानी' कविता के आधार पर रैदास की भक्ति पर प्रकाश डालिए।
3. 'जाकी जोति बरै दिन राती' का आशय स्पष्ट कीजिए।

● अति लघु उत्तरीय प्रश्न

1. रैदास किस काल के कवि थे?
2. रैदास की रचनाओं के नाम लिखिए।
3. रैदास के पिता का क्या नाम था?
4. रैदास की माता का नाम लिखिए।
5. रैदास किस कवि के समकालीन थे?

● काव्य सौन्दर्य एवं व्याकरण बोध

1. 'जैसे चितवत चन्द चकोरा' में कौन-सा अलंकार है?
2. निम्नलिखित के तत्सम रूप लिखिए–
   राती, सोनहिं, मोती।

● आन्तरिक मूल्यांकन

भक्तिकालीन कवियों को सूचीबद्ध कीजिए।

♦

टिप्पणी

कबीरदास

साखी

(1) **रीझि करि**—मुग्ध होकर। **प्रसंग**—उपदेश, कथा। **भीजि**—भीग।

(2) **पटतरे**—समतुल्य, **हौंस**—अभिलाषा।

(3) **जिनि बीसरि जाइ**—भूल न जाना (अन्यथा तुझे फिर संसार चक्र में भटकना पड़ेगा।)

(4) **भ्रमि-भ्रमि**—अनेक योनियों से भटकता हुआ। **इवै पड़न्त**—इसमें गिर पड़ता है। **उबरंत**—बच जाता है, उद्धार होता है। रूपक अलंकार है। नर का प्रयोग सभी जीवों के लिए किया गया है।

(5) **मैं**—अहं भाव। **प्रेमगली**—आत्मा एवं परमात्मा का प्रेम-मार्ग। **सांकरी**—संकीर्ण या तंग।

(6) **दूजा दुक्ख अपार**—इसके अतिरिक्त सब अपार दुःख के कारण हैं।

(7) **चित्त चमंकिया**—कबीर के हृदय में ज्ञान की ज्योति जग गयी है। **लाइ**—आग रूपक अलंकार है। भगवान् के स्मरण से ही संसार के कष्टों का निवारण हो सकता है।

(8) **झांई पड़ी**—अन्धेरा छाने लगा।

(9) **झूठे सुख**—सांसारिक सुख। **मोद**—प्रसन्नता, आनन्द। **जगत चबैना काल का**—सारा संसार मरणशील है।

(10) **मैं था**—मुझ में अहंकार था। **मैं नाहिं**—भगवान् को प्राप्त करने पर अहंकार नष्ट हो गया। **दीपक देख्या माहि**—अन्तःकरण में ज्ञान के जलते दीपक के प्रकाश में।

(11) **काल्हि पर्यूं**—कल-परसों अर्थात् निकट भविष्य में। **भ्वैं**—पृथ्वी।

(12) **रंग**—लगाव, अनुरक्ति।

(13) **इहि औसरि**—इस अवसर पर जब मनुष्य योनि में जन्म हुआ है। **अन्ति पड़ी मुख षेह**—अन्त में मुख पर धूल पड़ती है।

(14) **ढबका**—धक्का।

(15) **बीछड़ियाँ**—बिछड़ जाने पर अर्थात् मृत्यु हो जाने पर। **कांचली भुजंग**—जैसे साँप केंचुली को छोड़कर उसे फिर नहीं धारण करता।

मीराबाई

पदावली

(1) **मकराकृत**—मछली की आकृति के। **अरुण**—लाल। **रसाल**—रस से पूर्ण, कानों को मधुर प्रतीत होनेवाला। **भाल**—मस्तक। **बछल**—वत्सल।

(2) **म्हे**—मैंने। **अमोलक**—अमूल्य। **हरख-हरख**—प्रसन्न होकर।

(3) **छाने**—छिपाकर, आँख बचाकर। **बजन्ता ढोल**—ढोल बजाकर, घोषणा करके, प्रकट रूप में। **मुंहघो**—महँगा। **सुँहघो**—सस्ता। **तराजू तोल**—नाप-जोखकर। **अमोलक मोल**—अत्यधिक मूल्य देकर। **कौल**—प्रतिज्ञा, प्रण।

(4) **राची**—रची हुई। **बांची**—बची। **ब्याल**—सर्प। **काँची**—कच्ची। **जाँची**—प्रतीत हुई।

(5) **कानि**—मर्यादा। **ढिग**—पास। **राजी**—प्रसन्न। **मोई**—मुझे।

रहीम

दोहा

(1) **उत्तम**—श्रेष्ठ। **प्रकृति**—स्वभाव। **भुजंग**—साँप।

(2) **दून**—दो गुना। **जरदी**—पीलापन। **हरदी**—हल्दी। **चून**—चूना।

(3) **टूटे सुजन**—सज्जन व्यक्ति के नाराज होने पर। **पोइए**—पिरोइये, पिरोना चाहिए। **मुक्ताहार**—(मुक्ता + हार) मोतियों का हार।

(4) **गेह**—घर। **भेद**—रहस्य। **जिय**—हृदय। **ढरि**—ढलकते ही।

(5) **विपति कसौटी**—विपत्तिरूपी कसौटी। **कसौटी**—स्वर्ण परखने का काला पत्थर। **मीत**—मित्र।

(6) **छोह**—प्रेम। **मीनन कौ**—मछलियों का। **तजि**—छोड़कर।

(7) **दीन**—गरीब, दुःखी। **दीन बन्धु**—दीनों के भाई।

(8) **छवि**—रूप। **पर**—दूसरी। **लखि**—देखकर।

(9) **चटकाय**—झटककर। **जुरै**—जुड़ने पर।

(10) **कदली**—केला। **भुजंग**—काला नाग।

(11) **तरुवर**—वृक्ष। **सरवर**—तालाब। **सुजान**—सज्जन।

(12) **तरवारि**—तलवार। **न दीजिए डारि**—निरस्त मत करो, तिरस्कृत मत करो।

(13) **यों**—इस प्रकार। **गोत**—गोत्र। **बड़री**—बड़ी।

(14) **ओछे**—नीच। **नरन**—व्यक्तियों से। **स्वान**—कुत्ता।

भारतेन्दु हरिश्चन्द्र

प्रेम-माधुरी

कूकै लगीं कोइलैं—इस कविता में वर्षा के चित्र प्रस्तुत किये गये हैं; जैसे—कदम्ब के पेड़ पर कोयल का बोलना, वृक्ष के पत्तों का वर्षा के जल से धुलकर निर्मल हो जाना, मेढकों का टर्र-टर्र करना, मोरों का नृत्य करना, भूमि पर हरियाली छा जाना तथा बादलों का झुक-झुककर बरसना। वर्षा का सौन्दर्य वियोगियों के लिए दुःखदायी होता है। इस कविता में भी वर्षा को वियोगिनी के लिए दुःखदायी कहा गया है। **जिय पै जु होइ.........अधिकार**—यह उद्धव के प्रति गोपियों की उक्ति है। **यह संग में लागिये डोलैं सदा**—कृष्ण के प्रति गोपी की उक्ति है। संयोग और वियोग दोनों दिशाओं में गोपी की आँखें दुःखी हैं। **चाल प्रलै कि सु ठानती हैं**—आँखों से इतने आँसू निकलते हैं कि प्रलयकाल के समान जल ही जल हो जाता है। **उझपैं**—खुलना। **पहिले बहु भाँति**—श्रीकृष्ण से मिलन न होने पर गोपी द्वारा सखियों के प्रति उपालम्भ है। **ऊधौ जु सूधो गहो**—गोपियों की उद्धव के प्रति उक्ति है। **सखि आयो वसंत........**। वसन्त ऋतु में वियोगिनी के दुःख का वर्णन है। **रितून को कंत**—ऋतुराज। **गर सों**—आकंठ, पूरी तरह। **परसों**—(1) आगामी कल से आगे वाला दिन। (2) स्पर्श करूँगी। **बीती जानि औधि**—प्रियतम के आने की अवधि समाप्त हो गयी, यह जानकर ये दो आँखें। मृत्यु के समय आँखें प्रायः खुली रह जाती हैं, उसी पर यह उक्ति है। **जौन-जौन**—जिस-जिस।

मैथिलीशरण गुप्त

पंचवटी

अन्तिम चार छन्द लक्ष्मण के आत्म-कथन हैं।

चारु—सुन्दर। **अवनि**—धरती। **गन्धवह**—हवा, वायु। **नटी**—नर्तकी। **तुहिन**—ओस। **आर्त**—दुःखी। **आर्य**—बड़े भाई। **नरलोक**—आदमियों की दुनिया।

जयशंकर प्रसाद

पुनर्मिलन

मनु श्रद्धा पर अपना पूर्ण अधिकार चाहते थे। श्रद्धा के मन में भावी सन्तति के प्रति प्रेम को पल्लवित होते देखकर वे असन्तुष्ट हो श्रद्धा को निराश्रित छोड़कर चले गये। श्रद्धा अपने पुत्र के साथ जीवन-यापन कर रही थी। एक रात्रि उसने स्वप्न में मनु को घायल, मरणासन्न अवस्था में देखा। उस स्वप्न से प्रेरित होकर वह मनु को खोजने के लिए चल पड़ी।

साल रही—चुभ रही है, कसक रही है। **वह पुकार जैसी जलती**—श्रद्धा की पुकार दुःख के दाह से जलती हुई-सी प्रतीत होती थी। **विशृंखल**—अस्त-व्यस्त, बिखरे हुए। **कबरी**—जूड़ा, केशों का समूह। **छिन्न-पत्र मकरंद-लुटी-सी ज्यों मुरझाई हुई कली**—जिसकी पंखुड़ियाँ बिखर गयी हों और मधु लुट चुका हो ऐसी मुरझाई कली के समान श्रद्धा थकी हुई टूटी हुई थी। उपमा अलंकार है।

घुला हृदय बन नीर बहा—वेदना से द्रवित होकर मानो हृदय आँसुओं के रूप में बह निकला। **अनुलेपन**—उबटन, किसी तरल पदार्थ का लेप करना। **स्पन्दन**—कम्पन। **वेदी**—यज्ञवेदी, चबूतरा।

सूर्यकान्त त्रिपाठी 'निराला'

दान

पहला अरविन्द—इसके दो अर्थ हो सकते हैं—(1) उपवन में पहला कमल खिला। (2) पहला लाल मुखवाला सूर्य (ज्ञान का प्रतीक) निकला—पहला इसलिए कि इस दिन ही कवि को धर्म का आडम्बरपूर्ण स्वरूप देखकर ज्ञान हुआ है।

अनिन्द्य—प्रशंसनीय, निर्दोष। **सौरभ-वसना**—सुगन्धित से वस्त्र धारण किये। रूपक है। **कानों में प्राणों की कहती**—प्रेम का सन्देश दे रही है। **क्षीण कटि**—पतली कमर वाली (अर्थात् पतली धारा वाली)। **नटी नवल**—नवीन आयु वाली नर्तकी। **पर्यटनार्थ**—घूमने के लिए। **सदया**—दया से पूर्ण। **कृष्णाकाय**—काले शरीर वाला। **मृत प्राय**—मृत्यु के समीप। **दूर्वादल**—हरी घास। **मज्जन**—स्नान। **इतर**—दूसरा, अन्य।

सोहनलाल द्विवेदी

उन्हें प्रणाम

निर्धन के धन, निर्बल के बल, त्यागी, स्वाभिमानी, धीर, फाँसी के फन्दों को चूमने वाले और शोषक साम्राज्यवाद की दीवारें ढहाने वाले नेताओं में कवि का प्रणाम इन पंक्तियों में प्रस्तुत है। **प्रकाम**—यथेष्ट। **टेक**—संकल्प, आश्रय। **वितान**—विस्तार, फैलाव। **मधुकरियाँ**—पके अन्न की भिक्षा। **सरनाम**—प्रसिद्ध। **प्रतियाम**—पहर-पहर पर। **हविष्य**—हवन सामग्री।

हरिवंशराय बच्चन

पथ की पहचान

पथ की पहचान गीत का मूल भाव यह है कि सफल जीवनयापन हेतु मनुष्य को साहस के साथ जीवन-मार्ग पर अग्रसर होना चाहिए। जीवन की कठिनाइयों से घबराना नहीं चाहिए तथा अन्य महापुरुषों के आदर्शों से प्रेरणा लेनी चाहिए। **चित्त का अवधान** = मनोयोग, निश्चय। **गह्वर** = गड्ढे। **सरित, गिरि, गह्वर** बाधाओं एवं कठिनाइयों के प्रतीक हैं। **बाग, वन, सुमन** सुख के प्रतीक हैं। **कण्टकों के शर** = बाण की तरह चुभनेवाले काँटे, दुःख के प्रतीक। **कोरकों** = कली। **आन** = हठ। **निलय** = कक्ष, स्वप्न का प्रयोग कल्पना के लिए किया गया है। **रास्ते का एक काँटा पाँव का**

दिल चीर देता = जीवन की एक कठिनाई कभी-कभी मनुष्य को हताश कर देती है। **आँख में हो स्वर्ग लेकिन पाँव पृथ्वी पर टिके हों** = मन में चाहे कितनी ऊँची कल्पना हो परन्तु कार्य व्यावहारिक होना चाहिए।

नागार्जुन

बादल को घिरते देखा है

अमल = स्वच्छ। **बिसतन्तु** = कमलनाल के भीतर स्थित कोमल रेशे या तन्तु। **अभिशापित** = बुरे शाप के कारण दुःखी। कवि समय के अनुसार चकवा-चकवी को यह शाप है कि वे रात को साथ नहीं रह सकते। **क्रन्दन** = रुदन, चीत्कार। **शैवाल** = सिवार, पानी में उगनेवाली घास। **प्रणय-कलह** = किलोल, क्रीड़ा। **धनपति कुबेर** = उत्तर दिशा का तथा धन का स्वामी कुबेर। **अलका** = कुबेर की राजधानी का नाम। **मेघदूत** = कालिदास का प्रसिद्ध काव्य जिसमें उन्होंने मेघ को दूत बनाकर उसके द्वारा सन्देश भिजवाया है। **यायावर** = यात्री, घुमक्कड़, जो एक स्थान पर टिक कर न रहता हो। **झंझानिल** = वात्याचक्र, तूफानी हवा। **बर्फानी** = हिमाच्छादित, बर्फ से ढकी। **अलख** = न दिखायी देनेवाला। **उन्मादक** = नशीला। **परिमल** = सुगन्ध। **कुन्तल** = केश। **कुवलय** = नीलकमल। **शतदल रक्त कमल** = सौ पंखुड़ियोंवाला लाल कमल। **लोहित** = लाल। **त्रिपदी** = तिपाही, तीन पैरों वाली छोटी मेज। **निदाग** = दागहीन, स्वच्छ। **मदिरारुण** = मद्यपान के कारण हुई लाल (आँखें)। **उन्मद** = उन्मादपूर्ण, नशे से युक्त। **निर्झरिणी** = तटिनी, कल्लोलिनी, नदी। **रजत रचित मणि खचित** = चाँदी से बनी हुई (हुए) तथा मणियों से जड़े हुए। **द्राक्षासव** = अंगूर की मदिरा। **किन्नर** = स्वर्ग के गायक, गाने बजाने का पेशा करनेवाली एक जाति विशेष, नाग किन्नर आदि।

केदारनाथ अग्रवाल

अच्छा होता

परार्थी = दूसरे के लिए। **नियति** = प्रकृति, स्वभाव। **दगैल-दागी** = दोषी-कलंकी। **कच्चा** = कमजोर। **दिलदार** = सहृदय। **दिलेर** = हिम्मतवाला। **थाती** = धरोहर। **घाती** = धोखा देनेवाला। **ठगैत** = ठगनेवाला।

सितार-संगीत की रात

ओठ = ओष्ठ। **बोल** = स्वर। **किलोल** = क्रीड़ा। **हर्ष** = प्रसन्नता। **विचरण** = भ्रमण।

शिवमंगल सिंह 'सुमन'

युगवाणी

पद-चिह्न = पैर के चिह्न। **मुस्कान** = हँसी। **शबनम** = ओस। **सरिता** = नदी। **किसलय** = नव पल्लव या कोमल पत्ते। **अधरों** = ओष्ठ। **आभा** = सौन्दर्य। **अम्बर** = आकाश। **बिम्ब** = छाया। **सिन्धु** = समुद्र। **जाली चढ़ जायेगी** = विनष्ट हो जायेगी। **लाचारी** = विवशता। **जन्म अकारथ** = व्यर्थ जीवन। **आजादी** = स्वतन्त्रता। **मरघट** = श्मशान घाट। **सर्वहारा** = श्रमिक वर्ग। **कालिख** = कलंक। **घड़ियाँ आएँगी** = अवसर आयेंगे। **सैलाबों** = बाढ़ों।

संत रैदास

प्रभुजी = ईश्वर। **बास** = सुगन्ध। **घन** = बादल। **मोरा** = मयूर। **चकोर** = पपीहा। **बरै** = जले। **सोनहिं** = सोना। **स्वामी** = मालिक। **दासा** = दास, नौकर। **चितवत** = देखना। **समानी** = समाया हुआ है। **ज्योति** = प्रकाश।

♦